हिमाचली लोक संगीत का आधुनिक स्वरूप

ABHILASHA
Research Scholar, Department of Music, Himachal, Pradesh University, Summerhill, Shimla

सार संक्षेपिका

लोक संगीत को मानव जीवन का एक महत्वपूर्ण अंग माना जाता है। परम्पराएँ ही प्राचीन संगीत के संस्कारों, समाज के रीति– रिवाजों, आदतों तथा व्यवहारों को सुरक्षित एवं प्रकाशित करने में सक्षम हैं। लोक संगीत में लोक जीवन की छवि का सजीव चित्रण दृष्टिगोचर होता है। जिसके माध्यम से प्राचीन को आधुनिक से जोड़ा जाता है। आधुनिक युग में समय परिवर्तन के साथ लोक संगीत के स्वरूप में अत्यधिक बदलाव आए।

बीज शब्द

हिमाचली लोक संगीत, संगीत का आधुनिक स्वरूप

भूमिका

हिमाचल प्रदेश देव–भूमि के नाम से विदित है। सामाजिकता को जीवित रखने के लिए लोक संगीत को सहेजना अत्यावश्यक है। हिमाचली लोक–जीवन में भौगोलिक तथा सांस्कृतिक विविधता होने के कारण यहां के लोक संगीत में भी विविधता पाई जाती है। हिमाचली लोक संगीत में लय तथा नाद का स्वरूप, पर्वतों की गूंज एवं मर्मस्पर्शिता विद्यमान रहती है। लोक संगीत का उद्‌भ और विकास शास्त्र के बंधनों से मुक्त होकर प्राकृत अवस्था में हुआ है।

परिवर्तन प्रकृति का नियम है। वर्तमान में लोक संगीत का स्वरूप भी परिवर्तित हो चुका है। लोक–गीतों में प्रयुक्त होने वाले वाद्य तथा लोकनृत्यों में प्रयुक्त पोशाक इत्यादि में बदलाव देखा जा रहा है। पारंपरिक लोक–गीतों को आधुनिकता के साथ पेश किया जा रहा है। पाश्चात्य–संगीत का प्रभाव भी लोक संगीत पर दृष्टिगोचर हो रहा है।

लोक संगीत तथा आधुनिकता की पृष्ठभूमि

लोक संगीत का बहुत समृद्ध इतिहास रहा है। किसी भी प्रदेश का लोक संगीत उसकी आत्मा होता है। लोक संगीत एक संस्कृति पर आधारित होता है न कि किसी देश, राज्य या जिला इत्यादि पर। लोक संगीत कभी भी राजनीतिक सीमाओं के दायरे में नहीं आता अर्थात राजनीतिक सीमाओं में नहीं बंधता। देश के अन्य राज्यों की तरह हिमाचल प्रदेश के संगीत की अपनी एक विशेष शैली है। इस शैली को हिमाचली लोक संगीत के नाम से जाना जाता है लेकिन इसमें भी बहुत सी विविधताएं हैं यहां लगभग प्रत्येक जिले की एक अलग शैली है जो या तो किसी जिले की शैली के साथ मेल खाती है या किसी जिले की शैली से बिल्कुल अलग है। प्रदेश के 12 जिलों में से कुल्लू, चंबा, कांगड़ा, शिमला, मंडी, बिलासपुर, सोलन तथा सिरमौर इत्यादि जिलों के लोक गीतों को प्रदेश के सभी भागों में सुना जाता है। लाहौल–स्पीति तथा किन्नौर जिलों के लोक–गीतों की शैली अन्य जिलों से भिन्न है।

लोक संगीत की परिभाषा लोक–गीतों लोक–वाद्यों तथा लोक–नृत्य से पूर्ण होती है। गायन, वादन तथा नृत्य यह तीनों विधाएँ भिन्न–भिन्न होते हुए भी एक दूसरे की पूरक हैं। "लोक संगीत का सुंदरतम प्रतिबिंब लोक–गीतों में ही दिखाई पड़ता है क्योंकि लोक–गीतों में शब्दों तथा स्वरों के चयन में कृत्रिमता का अभाव रहता है। इनमें लोक–जीवन का सीधा–सादा चित्रण उपलब्ध होता है।" लोक–गीतों में छुपा आनंद उनके संगीत में ही अंतर्निहित होता है। लोक संगीत शास्त्रीय नियमों में आबद्ध नहीं है। लोक–गीतों की धुन किसने बनाई तथा लोक–गीतों के रचयिता कौन हैं? इसके विषय में कोई जानकारी नहीं मिलती। पीढ़ी–दर–पीढ़ी गायकों तथा आम जन–मानस द्वारा आगे बढ़ता रहा है। लोक संगीत के बारे में Victor Hugo का कथन है "folk music expresses that music cannot be put into words and that which cannot remain silent".

"लोक संगीत ग्रामीण तथा देहाती समाज का दर्पण कहलाता है।" लोक संगीत में जन–मानस की भावनाएं छिपी होती हैं। जिस कला को सीखने के लिए किसी विशिष्ट शिक्षा, अभ्यास तथा साधनों की आवश्यकता महसूस नहीं होती उसे लोकसंगीत कहते हैं। लोक संगीत में जितना महत्व लोक–गीतों का है उतना ही लोक वाद्यों का भी महत्व है। जितना मानव शरीर में मस्तिष्क का होना आवश्यक है उतना ही लोक संगीत में वाद्यों का होना भी है। लोक–नृत्यों का भी अत्यधिक महत्व है। कुछ लोक–नृत्यों में एक समय में केवल एक ही नर्तक नाचता है तथा कुछ नृत्य सामूहिक होते हैं। लोक–नृत्यों में संगीत की तीनों कलाओं गायन, वादन तथा नृत्य का समावेश रहता है।

आधुनिकता

समय के परिवर्तन के साथ परिवर्तित होती परिस्थितियों के साथ– साथ चलने का साहस करना ही आधुनिकता है। जिसके विचारों में समय के साथ बदलाव आए वही आधुनिक कहला सकता है। बाहरी परिवर्तनों के साथ–साथ आंतरिक परिवर्तन होना ही आधुनिकता है परंतु आधुनिकता का यह अर्थ नहीं है कि वह अपनी परंपराओं को भूलकर नवीनतम को ही अपने जीवन का आधार मानने लगे बल्कि प्राचीनतम परम्पराओं, प्राचीन मान्यताओं को नवीन, सामाजिक, राजनैतिक तथा वैज्ञानिक परिवेश से ग्रहण करते हुए नए मूल्यों की स्थापना करना है। रामस्वरूप चतुर्वेदी के शब्दों में "नवीन परिस्थितियों के संदर्भ में अपने आप का संस्कार करना ही आधुनिकता है।" आधुनिकता गतिशील है जो समयानुसार परिवर्तित होती है। आज के समय की आधुनिकता ही कल की परम्परा का रूप धारण कर लेती है अर्थात वर्तमान की आधुनिकता भविष्य की परम्परा बन जाती है। आधुनिकता को परम्परा से भिन्न नहीं समझा जाना चाहिए। भले ही परंपरा तथा आधुनिकता एक दूसरे के विरोधी प्रतीत होते हों लेकिन यह दोनों एक– दूसरे के पूरक हैं। आधुनिकता परम्परा

की विरोधी न होकर उसे वर्तमान से जोड़ने में सहायक होती है। परम्पराओं का आधार अनुभव ही माना जा सकता है। किसी भी विषय–वस्तु को आधुनिक रूप प्रदान करने के लिए परम्परा से परिचित होना अत्यावश्यक है। पाश्चात्य सभ्यताओं में भी परम्परागत तत्व कहीं न कहीं दृष्टिगोचर होते हैं लेकिन पाश्चात्य सभ्यता को आधुनिकता के दृष्टिकोण से ही देखा जाता है। लोक संगीत पर भी इसका अत्याधिक प्रभाव दिखाई पड़ता है।

लोक संगीत का बदलता स्वरूप

लोक संगीत के बदलते स्वरुप में सबसे बड़ा योगदान पश्चिमी सभ्यता का माना जाना चाहिए। स्वभाविक है कि यह बदलाव एक दिन में नहीं आया धीरे–धीरे ही इसका रूप बदला है। यह बदलाव समय के साथ तीव्र गति से बढ़ रहा है। लोक समाज का भी बाजारीकरण हो चुका है। पश्चिमी संस्कृति धीरे–धीरे लोक संस्कृति को अपना शिकार बनाती जा रही है। लोक गीत लोक वाद्य तथा लोक नृत्य किसी प्रदेश की धरोहर होते हैं लेकिन यह भी पाश्चात्य संस्कृति की चपेट में आ गए हैं।

हिमाचली लोकगीत कभी–कभार विवाह इत्यादि के अवसरों पर सुन लिए जाते थे लेकिन वर्तमान में डीजे इत्यादि ने इनका रूप ले लिया है। नई युवा पीढ़ी लोक संगीत तथा लोक संस्कृति से कटती हुई प्रतीत हो रही है। कुछ समय पहले हिमाचली लोक संगीत की लोकप्रियता ने शोक सूजन नामक नए अंदाज के साथ लोक गीतों को पेश किया। हिमाचल प्रदेश के कई संगीतकारों ने हिमाचली संगीत को हिमाचल तथा हिमाचल से बाहर पहुंचाने की बहुत बड़ी कोशिश की। हिमाचल के सुप्रसिद्ध बॉलीवुड गायक मोहित चौहान ने हिमाचली लोक गीतों को हिमाचल तथा हिमाचल से बाहर पहुंचाने की एक कामयाब कोशिश की। मोहित चौहान द्वारा गाए गए लोकगीत जैसे पारली बनिया मोर, जय भोले हो तथा माए नी मेरिए जमुई दी राहें अत्यधिक प्रचलित हुए। हिमाचल में प्रचलित रमन बैंड भी हिमाचली लोक संगीत को युवा पीढ़ी के मध्य प्रचलित करने का भरपूर प्रयास कर रहा है। इस बैंड ने संगीत की मौलिकता को बनाए रखते हुए वादों के साथ कुछ प्रयोग किए जिन्हें सुनकर तथा देखकर प्रतीत हुआ जैसे मानो हिमाचली लोक गीतों ने नई करवट ले ली हो।

वर्तमान में लोक संगीत का स्वरूप इतना बदल चुका है । युवा पीढ़ी के लिए यह जानना मुश्किल हो रहा है कि पारंपरिक लोक संगीत क्या है। आधुनिकता का पलड़ा पारंपरिकता पर भारी पड़ता दिखाई दे रहा है। इन परिस्थितियों के मद्देनजर परिवर्तनशील लोक समाज को यह देखना चाहिए कि परिवर्तन की इस लहर में कहीं वह अपना अस्तित्व ही ना खो बैठे।

निष्कर्ष

प्रत्येक युग में हुए बदलाव संगीत में भी परिवर्तन तथा प्रयोग की तीव्र अभिलाषा प्रकट करते हैं। कभी–कभी संगीत भोग–विलास का माध्यम भी बना लेकिन इसने अपना वर्चस्व बनाए रखा तथा अपनी मौलिकता व शुद्धता को नहीं त्यागा। किसी भी संस्कृति तथा सभ्यता के प्रभाव से मनुष्य का व्यवहार तो बदल सकता है लेकिन उसकी अभिव्यक्ति व आत्मा नहीं बदल सकती।

संदर्भ ग्रंथ सूची

शर्मा डॉ. गौतम (2012) हिमाचल प्रदेश लोक संस्कृति एवं साहित्य।
चतुर्वेदी रामस्वरूप (1960), हिन्दी नवलेखनए भारतीय ज्ञानपीठ, काशी।
गोवर्धन, शान्ति (2002) संगीत शास्त्र दर्पण, पाठक पब्लिकेशन।
संगीत कला विहार, नवम्बर 2016, पृ० 17, गंधर्व निकेतन, मुम्बई।

Pratibha Spandan